# मुहूर्त

## नक्षत्र

सूर्य के क्रान्तिवृत (सूर्य का भ्रमण मार्ग) के 27 बराबर भाग करने पर 27 नक्षत्रों की उत्पत्ति हुई। इस गणित से एक नक्षत्र का मान 360° ÷ 27 = 13°-20' होता है। आगे चलकर एक नक्षत्र को चार बराबर भागों में बाँटा जाता है जिसे नक्षत्र के चरण कहते हैं। इस गणित से एक चरण का मान (13°-20') ÷ 4 = 3°-20' होता है।

## मुहूर्त के लिए नक्षत्रों की सामान्य जानकारी, कार्यक्षेत्र और कारक आदि निम्न प्रकार से हैं:-

| नक्षत्रों के नाम | नक्षत्रों के स्वामी | नक्षत्रों के तत्व | नक्षत्रों में शुभता या अशुभता | नक्षत्रों के लिंग | नक्षत्रों में तारों की संख्या |
|---|---|---|---|---|---|
| अश्विनी | अश्विनी कुमार (देवताओं के चिकित्सक) | पृथ्वी | कार्य के लिए शुभ (गृह प्रवेश के लिए त्याज्य) | पुरूष | 3 |
| भरणी | यमराज (अन्तक) | पृथ्वी | कार्य के लिए नाशक | स्त्री | 3 |
| कृत्तिका | अग्नि (अनल) | पृथ्वी | कार्य के लिए नाशक | पुरूष | 6 |
| रोहिणी | ब्रह्मा (प्रजापति) | पृथ्वी | कार्य के लिए उत्तम | पुरूष | 5 |
| मृगशिरा | चन्द्रमा (शशभृत) | पृथ्वी | कार्य के लिए शुभ | पुरूष/स्त्री | 3 |
| आर्द्रा | महादेव (रूद्र) | जल | कार्य के लिए शुभ | स्त्री | 1 |
| पुनर्वसु | अदिति (देवताओं की | जल | कार्य के लिए मध्यम | पुरूष | 4 |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | माता) | | | | |
| पुष्य | बृहस्पति (देवताओं के आचार्य) | जल | कार्य के लिए शुभ | पुरूष | 3 |
| अश्लेषा | सर्प (भुजंग) | जल | कार्य के लिए चिंताजनक | स्त्री | 5 |
| मघा | पितृगण (पित्तर) | जल | कार्य के लिए नाशक | पुरूष | 5 |
| पूर्वाफाल्गुनी | सूर्य (भग नामक सूर्य) | जल | कार्य के लिए मृत्यु कारक | स्त्री | 2 |
| उत्तराफाल्गुनी | सूर्य (अर्यमा नामक सूर्य) | अग्नि | कार्य के लिए शिक्षादायक | स्त्री | 2 |
| हस्त | सूर्य (आदित्य) | अग्नि | कार्य के लिए लक्ष्मीदायक | पुरूष | 5 |
| चित्रा | विश्वकर्मा (त्वष्टा) | अग्नि | कार्य के लिए शुभ | स्त्री | 1 |
| स्वाती | वायु (पवन) | अग्नि | कार्य के लिए अशुभ | स्त्री | 1 |
| विशाखा | इन्द्र और अग्नि (इन्द्राग्नि) | अग्नि | कार्य के लिए अशुभ | स्त्री | 4 |
| अनुराधा | सूर्य (मित्र नामक सूर्य) | वायु | कार्य के लिए उत्तम | स्त्री | 4 |
| ज्येष्ठा | इन्द्र (देवताओं के राजा) | वायु | कार्य के लिए क्षयप्रद | पुरूष/स्त्री | 3 |
| मूला | राक्षस (निऋति) | वायु | कार्य के लिए हानिकारक | स्त्री | 11 |
| पूर्वाषाढ़ा | जल (नीर) | वायु | कार्य के लिए हानिकारक | स्त्री | 2 |
| उत्तराषाढ़ा | विश्वेदेव (विश्वे) | वायु | कार्य के लिए वृद्धिकारक | स्त्री | 2 |
| अभिजित | ब्रह्मा (विधि) | | कार्य के लिए उत्तम | | 3 |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| श्रवण | गोविन्द (भगवान विष्णु) | वायु | कार्य के लिए सुखकारक | पुरूष/स्त्री | 3 |
| धनिष्ठा | वसु (धनिष्ठा) | आकाश | कार्य के लिए शुभ | पुरूष | 4 |
| शतभिषा | वरूण (अपांपति) | आकाश | कार्य के लिए शुभ | पुरूष | 100 |
| पूर्वाभाद्रपद | सूर्य (अजचरण नामक सूर्य) | आकाश | कार्य के लिए मृत्युकारक | पुरूष | 2 |
| उत्तरा भाद्रपद | सूर्य (अहिर्बुध्न्य नामक सूर्य) | आकाश | कार्य के लिए लक्ष्मीकारक | पुरूष | 2 |
| रेवती | सूर्य (पुषा नामक सूर्य) | आकाश | कार्य के लिए कामकारक | स्त्री | 32 |

**शुद्ध नक्षत्रः-** वे नक्षत्र जो एक ही सूर्योदय को छू पाते हैं, शुद्ध नक्षत्र कहलाते हैं।

**क्षय नक्षत्रः-** वे नक्षत्र जो एक भी सूर्योदय को नही छू पाते हैं, क्षय नक्षत्र कहलाते हैं।

**वृद्धि नक्षत्रः-** वे नक्षत्र जो दो सूर्योदय को छू पाते हैं, वृद्धि नक्षत्र कहलाते हैं।

सभी नक्षत्र मानव जाति के कल्याणार्थ अनेकों कारक और गुण धर्म का प्रतिनिधित्व करते हैं जैसे- चोरी हुई वस्तु या खोई हुई वस्तु या गुम हुआ छोटा बालक या घर से चला गया व्यक्ति, किस दिशा में गया है, मिलेगा या नही मिलेगा और कब मिलेगा आदि का नक्षत्रों के आधार पर अनुमान लगाया जा सकता है। यदि इंगित घटना **अन्धाक्ष नक्षत्र** (रोहिणी, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा और रेवती) में हुई हो तो पूर्व दिशा में और शीघ्रलाभ की प्राप्ति का सूचक है। यदि इंगित घटना **मन्दाक्ष नक्षत्र** (मृगशिरा, अश्लेषा, हस्त, अुनराधा, उत्तराषाढ़ा, शतभिषा और अश्विनी) में हुई हो तो दक्षिण दिशा में और बहुत अधिक प्रयत्न के बाद लाभ की प्राप्ति का सूचक है। यदि इंगित घटना **मध्याक्ष नक्षत्र** (आर्द्रा, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, अभिजित, पूर्वाभाद्रपद और भरणी) में हुई हो तो पश्चिम दिशा में

और बहुत प्रयत्न के बाद केवल सूचना मिलने पर भी लाभ नही होने का सूचक है। यदि इंगित घटना **सुलोचन नक्षत्र** (पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, स्वाती, मूल, श्रवण, उत्तराभाद्रपद और कृत्तिका) में हुई हो तो उत्तर दिशा में और न तो सूचना और न ही लाभ का सूचक है।

रेवती, शतभिषा, अश्विनी, श्रवण और चित्रा नक्षत्रों में वस्तु खरीदना शुभ होता है। तीनों पूर्वा, विशाखा, कृत्तिका, अश्लेषा और भरणी नक्षत्रों में वस्तु बेचना शुभ होता है। मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अुनराधा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, हस्त, अश्विनी और पुष्य नक्षत्रों में दुकान खोलना शुभ होता है।

**स्थिर या ध्रुव संज्ञक नक्षत्रः-** उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद और रोहिणी स्थिर कार्यों को करने में सहायक होते हैं जैसे नई नौकरी आरंभ करना, ग्रह प्रवेश करना आदि।

**चर संज्ञक नक्षत्रः-** पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और स्वाती चर कार्यों को करने में सहायक होते हैं जैसेः- वाहन का शुभारंभ करना, यात्रा पर जाना आदि।

**उग्र या क्रूर (पाप) संज्ञक नक्षत्रः-** पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, भरणी और मघा, उग्र या क्रूर कार्यों को करने में सहायक होते हैं जैसेः- बन्दूक आदि का लाइसेन्स लेने की शुरूवात करना, किसी भी प्रकार के लड़ाई-झगड़े की शुरूवात करना या कोर्ट में पहली बार दस्तावेज देना आदि।

**मिश्र संज्ञक नक्षत्रः-** विशाखा और कृत्तिका, लगभग सभी कार्यों को करने में सहायक होते हैं पर विशेष तौर पर कला या मनोरंजन, नृत्य या संगीत और विवाह आदि का शुभारंभ करने के लिए प्रशस्त हैं।

**क्षिप्र या लघु संज्ञक नक्षत्रः-** हस्त, अश्विनी, पुष्य और अभिजित, क्षिप्र या लघु कार्यों को करने में सहायक होते हैं जैसेः- छोटी दुकान, सामान बेचना, पठन-पाठन, और औषधि प्रयोग आदि का आरंभ करना।

**मृदु या मैत्री संज्ञक नक्षत्रः-** मृगशिरा, अनुराधा, चित्रा और रेवती मृदु या मैत्री कार्यों को करने में सहायक होते हैं जैसेः- मनोरंजन, फैशन, आभूषण बनवाना या धारण करना, मित्रता और प्रेम-प्रसंग आदि का शुभारंभ करना।

**दारूण या तीक्ष्ण नक्षत्रः-** मूल, अश्लेषा, ज्येष्ठा और आर्द्रा दारूण या तीक्ष्ण कार्यों को करने में सहायक होते हैं जैसे :- पशुओं से संबंधित कार्य और शत्रुओं पर विजय प्राप्ति के लिए शुरूवात आदि करना।

**अपने कार्य के अनुकूल नक्षत्र न मिले तो नक्षत्र स्वामी वाली तिथि में भी संबंधित नक्षत्र का कार्य किया जा सकता है।**

श्रावण, कार्तिक, चैत्र और पौष के महीनों में मूल नक्षत्र का वास भूलोक में होता है, इसलिए इन महीनों में मूल नक्षत्र विशेष रूप से विचारणीय होता है, जबकि आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन और माघ में मूल नक्षत्र का प्रभाव स्वर्गलोक में और मार्गशीर्ष, वैशाख, ज्येष्ठ और फाल्गुन में मूल नक्षत्र का प्रभाव पाताललोक में होता है।

एक बार फिर से सभी नक्षत्रों को तीन और संज्ञकों के साथ जोड़कर उनके कार्यों को और अधिक बल दिया जाता है, जो निम्न प्रकार से हैं।

**उर्ध्वमुख (ऊपर दृष्टि) संज्ञक नक्षत्रः-** उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पुष्य और आर्द्रा, उर्ध्व संज्ञक कार्यों को करने में सहायक होते हैं जैसेः- बहुमंजिली इमारत और उच्चपद के लिए आवेदन देने का शुभारंभ करना और षोढ़श संस्कार करना आदि।

**त्रियकमुख (सीधी दृष्टि) या तिर्यङमुख संज्ञक नक्षत्र** :- रेवती, चित्रा, मृगशिरा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुनर्वसु, स्वाती और ज्येष्ठा, त्रियक (सीधी) कार्यों

को करने में सहायक होते हैं जैसेः- वाहन खरीदना या चलाना और समुद्री यात्रा करना आदि।

**अधोमुखी (नीचे दृष्टि) संज्ञक नक्षत्रः-** पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, भरणी, मघा, विशाखा, कृत्तिका, मूल और अश्लेषा, अधो (नीचे) कार्यों को करने में सहायक होते हैं जैसेः- गहरी खुदाई की शुरूवात करना और किसी गुप्त कार्य का शुभारंभ करना आदि।

**पंचकः-** जब चन्द्रमा कुम्भ राशि से मीन राशि तक गोचर करता है तो वह समय पंचक के नाम से जाना जाता है, जिसमें धनिष्ठा (तीसरा चरण और चौथा चरण) शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती नक्षत्र शामिल हैं। इन नक्षत्रों में अनेकों विचारणीय विषय होते हैं जैसेः- दक्षिण दिशा की यात्रा निषेध है, लकड़ी का सामान खरीदना निषेध है और मृत्यु के समय विचारणीय आदि।

**कुम्भ चक्रः-** (केवल गृह प्रवेश के लिए विचारणीय) सूर्य के नक्षत्र से गिनकर चन्द्रमा तक के नक्षत्र का अन्तर यदि 0 से 5 तक हो तो गृह प्रवेश अशुभ, 6 से 13 तक हो तो गृह प्रवेश शुभ, 14 से 21 तक हो तो गृह प्रवेश अशुभ और 22 से 27 तक हो तो गृह प्रवेश शुभ होता है।

**चन्द्रमास शून्य नक्षत्रः-** (धन का नाश या अपव्यय से बचने के लिए विचारणीय नक्षत्र) यदि संभव हो तो निम्न चन्द्रमासों में इंगित नक्षत्रों के दिन धन से संबंधित कार्य न करें।

| चन्द्रमास | नक्षत्र |
|---|---|
| चैत्र | रोहिणी, अश्विनी |
| वैशाख | चित्रा, स्वाती |
| ज्येष्ठ | उत्तराषाढ़ा, पुष्य |
| आषाढ़ | पूर्वाफाल्गुनी, धनिष्ठा |

| | |
|---|---|
| श्रावण | उत्तराषाढ़ा, श्रवण |
| भाद्रपद | शतभिषा, रेवती |
| आश्विन | पूर्वाभाद्रपद |
| कार्तिक | कृत्तिका, मघा |
| मार्गशीर्ष | चित्रा, विशाखा |
| पौष | आर्द्रा, अश्विनी, हस्त |
| माघ | श्रवण, मूल |
| फाल्गुन | भरणी, ज्येष्ठा |

पूर्ण ग्रहण जिस नक्षत्र में हो उस नक्षत्र का त्याग अगले छः माह तक, अर्ध ग्रहण हो तो तीन माह तक और चौथाई ग्रहण हो तो एक माह तक करना चाहिए। ग्रहण के दिन सहित अगले तीन दिनों और पिछले तीन दिनों तक शुभ कार्य विचारणीय होते हैं।

## रवियोग

यदि किसी विशेष कार्य के लिए इंगित नक्षत्र की प्राप्ति नही होती है तो **रवियोग** का प्रयोग करना चाहिए, जो एक तात्कालिक शुभ योग है और सभी प्रकार के कुयोगों की अशुभता को न्यूनतम या समाप्त करने में सहायक होता है। सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र यदि 4,6,9,10,13 और 20 हो, तो उस दिन रवि योग बनता है। आवश्यक कार्य हो और अनुकूल नक्षत्र न हो तो गो दान या गो के लिए चारादान करके कार्य किया जा सकता है।

यदि आपके  कार्य के अनुकूल नक्षत्र उपलब्ध हो जाए तो उसमें अपने जन्म नक्षत्र आदि से भी तुलना करके देख लेना चाहिए। जिस नक्षत्र में आपका जन्म हुआ है, उसे जन्म नक्षत्र कहते हैं। उसके बाद क्रमशः सम्पत, विपत (अशुभ), क्षेम, प्रत्यरि (अशुभ), साधक, वध (अशुभ), मैत्र और अतिमैत्र की पहली आवृति उसके बाद दूसरी आवृति और अंत में तीसरी आवृति होती है। ध्यान रहे विपत, प्रत्यरि और वध शुभ नही होते, इसलिए इन नक्षत्रों में कार्य आरंभ न करें, यदि पहली आवृति का अशुभ (विपत, प्रत्यरि और वध) नक्षत्र है तो 60 घटी (पूरा दिन) त्याज्य है,

दूसरी आवृति का अशुभ (विपत, प्रत्यरि और वध) नक्षत्र है तो पहली 20 घटी (8 घण्टे) त्याज्य हैं और यदि तीसरी आवृति का अशुभ (विपत, प्रत्यरि और वध) नक्षत्र पड़ता है तो भी कार्य किया जा सकता है। यदि कार्य अति आवश्यक है और आपके अनुकूल नक्षत्र आपके जन्म नक्षत्र की पहली ही आवृति के अशुभ (विपत, प्रत्यरि और वध) में आता है तो परिहारों का प्रयोग करके अपना कार्य किया जा सकता है जैसे विपत के लिए गुड़ दान करना, प्रत्यरि के लिए नमक दान करना और वध के लिए स्वर्ण या काले तिल दान करना चाहिए।

## अनेकों कार्य के लिए जन्म नक्षत्र को भी शुभ नही माना जाता है जैसेः- जन्म नक्षत्र के दिन औषधि आरंभ नही करनी चाहिए, उसके परिहार के लिए कार्य आरंभ से पहले सब्जी आदि का दान करना चाहिए।

मंगलवार, रविवार या गुरूवार के दिन यदि अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, श्रवण या शतभिषा नक्षत्र हो तो शल्यचिकित्सा में शीघ्र लाभ के लिए सहायक मुहूर्त है। रविवार, सोमवार, मंगलवार, बृहस्पतिवार या शुक्रवार के दिन यदि अश्विनी, रोहिणी, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, श्रवण या शतभिषा नक्षत्र हो तो नई औषधी आरंभ करना स्वास्थ्य लाभ के लिए सहायक होता है।

**रविवार** के दिन एक विशेष **नक्षत्र** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

| क्रम संख्या | नक्षत्रों के नाम | शुभ/अशुभ योग | शुभ/अशुभ योगों के नाम | निषेध कार्य तथा अशुभ योगों की |
|---|---|---|---|---|

| | | | | त्याज्य आरंभिक घटी (मिनट) |
|---|---|---|---|---|
| 1 | अश्विनी | शुभ | सर्वार्थ सिद्धि | |
| 2 | भरणी | अशुभ | दग्ध (अधम) | यात्रा/शुभ कार्य |
| 3 | कृत्तिका | अशुभ | कुयोग | |
| 4 | रोहिणी | शुभ | अमृत | |
| 5 | मृगशिरा | | | |
| 6 | आर्द्रा | | | |
| 7 | पुनर्वसु | | | |
| 8 | पुष्य | शुभ | अमृत/सर्वार्थ सिद्धि/रविपुष्य | |
| 9 | अश्लेषा | शुभ | सर्वार्थ सिद्धि | |
| 10 | मघा | अशुभ | यम घण्ट | यात्रा/शुभ कार्य |
| 11 | पूर्वाफाल्गुनी | | | |
| 12 | उत्तराफाल्गुनी | शुभ | अमृतसिद्धि/ सर्वार्थ सिद्धि | |
| 13 | हस्त | शुभ | अमृतसिद्धि/ सर्वार्थ सिद्धि/हस्त आदित्य योग | |
| 14 | चित्रा | | | |
| 15 | स्वाती | | | |
| 16 | विशाखा | अशुभ | उत्पात | |
| 17 | अनुराधा | अशुभ | मृत्यु | |
| 18 | ज्येष्ठा | अशुभ | काण | |
| 19 | मूला | शुभ | अमृत/ सर्वार्थ सिद्धि | |
| 20 | पूर्वाषाढ़ा | | | |
| 21 | उत्तराषाढ़ा | शुभ | अमृत सिद्धि/सर्वार्थ सिद्धि | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 22 | अभिजित | | | |
| 23 | श्रवण | | | |
| 24 | धनिष्ठा | अशुभ | कुयोग | |
| 25 | शतभिषा | | | |
| 26 | पूर्वा भाद्रपद | | | |
| 27 | उत्तरा भाद्रपद | शुभ | अमृत सिद्धि/सर्वार्थ सिद्धि | |
| 28 | रेवती | शुभ | प्रशस्त/अमृत | |

ध्वांक्ष, वज्र और मुद्गर योगों की आरंभिक 5 घटी, पद्म और लुम्ब योगों की आरंभिक 4 घटी, गदयोग की आरंभिक 7 घटी, धूम्रयोग की आरंभिक 1 घटी, काणयोग की आरंभिक 2 घटी और मुसलयोग की आरंभिक 2 घटी को छोड़कर उनकी शेष घटियों में शुभ कार्य किया जा सकता है, जबकि राक्षस, मृत्यु, उत्पात और काल योगों की पूर्ण घटियां शुभ कार्यों के लिए त्याज्य हैं। (1 घटी = 24 मिनट)

**सोमवार** के दिन एक विशेष **नक्षत्र** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

| क्रम संख्या | नक्षत्रों के नाम | शुभ/अशुभ योग | शुभ/अशुभ योगों के नाम | निषेध कार्य तथा अशुभ योगों की त्याज्य आरंभिक घटी (मिनट) |
|---|---|---|---|---|
| 1 | अश्विनी | शुभ | अमृत | |
| 2 | भरणी | | | |
| 3 | कृत्तिका | | | |
| 4 | रोहिणी | शुभ | अमृत/सर्वार्थ सिद्धि | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 5 | मृगशिरा | शुभ | | अमृत सिद्धि/अमृत/ सर्वार्थ सिद्धि | | |
| 6 | आर्द्रा | अशुभ | | कुयोग | | |
| 7 | पुनर्वसु | | | | | |
| 8 | पुष्य | शुभ | अशुभ | सर्वार्थ सिद्धि | कुयोग | |
| 9 | अश्लेषा | | | | | |
| 10 | मघा | | | | | |
| 11 | पूर्वाफाल्गुनी | शुभ | | अमृत | | |
| 12 | उत्तराफाल्गुनी | शुभ | | अमृत | | |
| 13 | हस्त | शुभ | | प्रशस्त/अमृत | | |
| 14 | चित्रा | अशुभ | | दग्ध (अधम) | | यात्रा/शुभ कार्य |
| 15 | स्वाती | अशुभ | | कुयोग | | |
| 16 | विशाखा | अशुभ | | यम घण्ट | | यात्रा/शुभ कार्य |
| 17 | अनुराधा | शुभ | | सर्वार्थ सिद्धि | | |
| 18 | ज्येष्ठा | | | | | |
| 19 | मूला | | | | | |
| 20 | पूर्वाषाढ़ा | अशुभ | | उत्पात | | |
| 21 | उत्तराषाढ़ा | अशुभ | | मृत्यु | | |
| 22 | अभिजित | अशुभ | | काण | | |
| 23 | श्रवण | शुभ | | सिद्ध/अमृत/सर्वार्थ सिद्धि | | |
| 24 | धनिष्ठा | शुभ | | अमृत | | |
| 25 | शतभिषा | | | | | |
| 26 | पूर्वा भाद्रपद | शुभ | | अमृत | | |
| 27 | उत्तरा भाद्रपद | | | | | |
| 28 | रेवती | | | | | |

ध्वांक्ष, वज्र और मुद्गर योगों की आरंभिक 5 घटी, पद्म और लुम्ब योगों की आरंभिक 4 घटी, गदयोग की आरंभिक 7 घटी, धूम्रयोग की आरंभिक 1 घटी,

काणयोग की आरंभिक 2 घटी और मुसलयोग की आरंभिक 2 घटी को छोड़कर उनकी शेष घटियों में शुभ कार्य किया जा सकता है, जबकि राक्षस, मृत्यु, उत्पात और काल योगों की पूर्ण घटियां शुभ कार्यों के लिए त्याज्य हैं। (1 घटी = 24 मिनट)

**मंगलवार** के दिन एक विशेष **नक्षत्र** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

| क्रम संख्या | नक्षत्रों के नाम | शुभ/अशुभ योग | | शुभ/अशुभ योगों के नाम | | निषेध कार्य तथा अशुभ योगों की त्याज्य आरंभिक घटी (मिनट) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | अश्विनी | शुभ | | अमृत सिद्धि / सर्वार्थ सिद्धि | | गृहनिर्माण और गृहप्रवेश त्याज्य |
| 2 | भरणी | | | | | |
| 3 | कृत्तिका | शुभ | | अमृत सिद्धि/ सर्वार्थ सिद्धि | | |
| 4 | रोहिणी | | | | | |
| 5 | मृगशिरा | | | | | |
| 6 | आर्द्रा | अशुभ | | यम घण्ट | | यात्रा/शुभ कार्य |
| 7 | पुनर्वसु | | | | | |
| 8 | पुष्य | शुभ | | प्रशस्त/अमृत | | |
| 9 | अश्लेषा | शुभ | अशुभ | अमृत/ सर्वार्थ सिद्धि | कुयोग | |
| 10 | मघा | | | | | |
| 11 | पूर्वाफाल्गुनी | | | | | |
| 12 | उत्तराफाल्गुनी | शुभ | | सर्वार्थ सिद्धि | | |
| 13 | हस्त | | | | | |
| 14 | चित्रा | | | | | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 15 | स्वाती | शुभ | अमृत | |
| 16 | विशाखा | | | |
| 17 | अनुराधा | अशुभ | कुयोग | |
| 18 | ज्येष्ठा | | | |
| 19 | मूला | | | |
| 20 | पूर्वाषाढ़ा | | | |
| 21 | उत्तराषाढ़ा | अशुभ | दग्ध (अधम) | यात्रा/ शुभ कार्य |
| 22 | अभिजित | | | |
| 23 | श्रवण | | | |
| 24 | धनिष्ठा | अशुभ | उत्पात | |
| 25 | शतभिषा | अशुभ | मृत्यु | |
| 26 | पूर्वा भाद्रपद | अशुभ | काण | |
| 27 | उत्तरा भाद्रपद | शुभ | सर्वार्थ सिद्ध/ अमृत/ | |
| 28 | रेवती | शुभ | अमृत | |

ध्वांक्ष, वज्र और मुद्गर योगों की आरंभिक 5 घटी, पद्म और लुम्ब योगों की आरंभिक 4 घटी, गदयोग की आरंभिक 7 घटी, धूम्रयोग की आरंभिक 1 घटी, काणयोग की आरंभिक 2 घटी और मुसलयोग की आरंभिक 2 घटी को छोड़कर उनकी शेष घटियों में शुभ कार्य किया जा सकता है, जबकि राक्षस, मृत्यु, उत्पात और काल योगों की पूर्ण घटियां शुभ कार्यों के लिए त्याज्य हैं। (1 घटी = 24 मिनट)

**बुधवार** के दिन एक विशेष **नक्षत्र** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

| क्रम संख्या | नक्षत्रों के नाम | शुभ/अशुभ योग | शुभ/अशुभ योगों के नाम | निषेध कार्य तथा अशुभ योगों की त्याज्य आरंभिक |
|---|---|---|---|---|

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | | | | घटी (मिनट) |
| 1 | अश्विनी | अशुभ | मृत्यु | |
| 2 | भरणी | अशुभ | काण | |
| 3 | कृत्तिका | शुभ | सिद्ध/अमृत/सर्वार्थ सिद्धि | |
| 4 | रोहिणी | शुभ | प्रशस्त/अमृत/ सर्वार्थ सिद्धि | |
| 5 | मृगशिरा | शुभ | सर्वार्थ सिद्धि | |
| 6 | आर्द्रा | अशुभ | कुयोग | |
| 7 | पुनर्वसु | | | |
| 8 | पुष्य | | | |
| 9 | अश्लेषा | | | |
| 10 | मघा | | | |
| 11 | पूर्वाफाल्गुनी | अशुभ | कुयोग | |
| 12 | उत्तराफाल्गुनी | | | |
| 13 | हस्त | शुभ | सर्वार्थ सिद्धि | |
| 14 | चित्रा | | | |
| 15 | स्वाती | | | |
| 16 | विशाखा | | | |
| 17 | अनुराधा | शुभ | अमृत सिद्धि/अमृत/ सर्वार्थ सिद्धि | |
| 18 | ज्येष्ठा | | | |
| 19 | मूला | अशुभ | यम घण्ट | यात्रा/शुभ कार्य |
| 20 | पूर्वाषाढ़ा | | | |
| 21 | उत्तराषाढ़ा | | | |
| 22 | अभिजित | | | |
| 23 | श्रवण | | | |
| 24 | धनिष्ठा | अशुभ | दग्ध (अधम) | |
| 25 | शतभिषा | शुभ | अमृत | |
| 26 | पूर्वा भाद्रपद | | | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 27 | उत्तरा भाद्रपद | | | |
| 28 | रेवती | अशुभ | उत्पात | |

ध्वांक्ष, वज्र और मुद्गर योगों की आरंभिक 5 घटी, पद्म और लुम्ब योगों की आरंभिक 4 घटी, गदयोग की आरंभिक 7 घटी, धूम्रयोग की आरंभिक 1 घटी, काणयोग की आरंभिक 2 घटी और मुसलयोग की आरंभिक 2 घटी को छोड़कर उनकी शेष घटियों में शुभ कार्य किया जा सकता है, जबकि राक्षस, मृत्यु, उत्पात और काल योगों की पूर्ण घटियां शुभ कार्यों के लिए त्याज्य हैं। (1 घटी = 24 मिनट)

**बृहस्पतिवार** के दिन एक विशेष **नक्षत्र** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

| क्रम संख्या | नक्षत्रों के नाम | शुभ/अशुभ योग | शुभ/अशुभ योगों के नाम | निषेध कार्य तथा अशुभ योगों की त्याज्य आरंभिक घटी (मिनट) |
|---|---|---|---|---|
| 1 | अश्विनी | शुभ | सर्वार्थ सिद्धि | |
| 2 | भरणी | अशुभ | कुयोग | |
| 3 | कृत्तिका | अशुभ | यम घण्ट | यात्रा/शुभ कार्य |
| 4 | रोहिणी | अशुभ | उत्पात | |
| 5 | मृगशिरा | अशुभ | मृत्यु | |
| 6 | आर्द्रा | अशुभ | काण | |
| 7 | पुनर्वसु | शुभ | सिद्ध/अमृत/सर्वार्थ सिद्धि | |
| 8 | पुष्य | शुभ | गुरूपुष्य/अमृतसिद्धि/ अमृत/सर्वार्थ सिद्धि | विवाह त्याज्य |
| 9 | अश्लेषा | | | |
| 10 | मघा | अशुभ | कुयोग | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | पूर्वाफाल्गुनी | | | | | |
| 12 | उत्तराफाल्गुनी | अशुभ | | दग्ध (अधम) | | यात्रा/शुभ कार्य |
| 13 | हस्त | | | | | |
| 14 | चित्रा | | | | | |
| 15 | स्वाती | शुभ | | प्रशस्त/अमृत | | |
| 16 | विशाखा | | | | | |
| 17 | अनुराधा | शुभ | | अमृत/सर्वार्थ सिद्धि | | |
| 18 | ज्येष्ठा | | | | | |
| 19 | मूला | अशुभ | | कुयोग | | |
| 20 | पूर्वाषाढ़ा | | | | | |
| 21 | उत्तराषाढ़ा | | | | | |
| 22 | अभिजित | | | | | |
| 23 | श्रवण | | | | | |
| 24 | धनिष्ठा | | | | | |
| 25 | शतभिषा | अशुभ | | कुयोग | | |
| 26 | पूर्वा भाद्रपद | | | | | |
| 27 | उत्तरा भाद्रपद | | | | | |
| 28 | रेवती | शुभ | अशुभ | सर्वार्थ सिद्धि | कुयोग | |

ध्वांक्ष, वज्र और मुद्गर योगों की आरंभिक 5 घटी, पद्म और लुम्ब योगों की आरंभिक 4 घटी, गदयोग की आरंभिक 7 घटी, धूम्रयोग की आरंभिक 1 घटी, काणयोग की आरंभिक 2 घटी और मुसलयोग की आरंभिक 2 घटी को छोड़कर उनकी शेष घटियों में शुभ कार्य किया जा सकता है, जबकि राक्षस, मृत्यु, उत्पात और काल योगों की पूर्ण घटियां शुभ कार्यों के लिए त्याज्य हैं। (1 घटी = 24 मिनट)

**शुक्रवार** के दिन एक विशेष **नक्षत्र** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

| क्रम संख्या | नक्षत्रों के नाम | शुभ/अशुभ योग | | शुभ/अशुभ योगों के नाम | | निषेध कार्य तथा अशुभ योगों की त्याज्य आरंभिक घटी (मिनट) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | अश्विनी | शुभ | | अमृत/सर्वार्थ सिद्धि | | |
| 2 | भरणी | | | | | |
| 3 | कृत्तिका | | | | | |
| 4 | रोहिणी | अशुभ | | यम घण्ट | | यात्रा/शुभ कार्य |
| 5 | मृगशिरा | | | | | |
| 6 | आर्द्रा | | | | | |
| 7 | पुनर्वसु | शुभ | | सर्वार्थ सिद्धि | | |
| 8 | पुष्य | अशुभ | | उत्पात | | |
| 9 | अश्लेषा | अशुभ | | मृत्यु | | |
| 10 | मघा | अशुभ | | काण | | |
| 11 | पूर्वाफाल्गुनी | शुभ | | सिद्ध/अमृत | | |
| 12 | उत्तराफाल्गुनी | शुभ | अशुभ | प्रशस्त/अमृत | कुयोग | |
| 13 | हस्त | | | | | |
| 14 | चित्रा | | | | | |
| 15 | स्वाती | अशुभ | | कुयोग | | |
| 16 | विशाखा | | | | | |
| 17 | अनुराधा | शुभ | | अमृत/सर्वार्थ सिद्धि | | |
| 18 | ज्येष्ठा | अशुभ | | दग्ध (अधम) | | यात्रा/शुभ कार्य |
| 19 | मूला | | | | | |
| 20 | पूर्वाषाढ़ा | | | | | |
| 21 | उत्तराषाढ़ा | अशुभ | | कुयोग | | |
| 22 | अभिजित | | | | | |
| 23 | श्रवण | शुभ | | अमृत/सर्वार्थ सिद्धि | | |
| 24 | धनिष्ठा | | | | | |
| 25 | शतभिषा | | | | | |
| 26 | पूर्वा भाद्रपद | शुभ | | अमृत | | |
| 27 | उत्तरा भाद्रपद | शुभ | अशुभ | अमृत | कुयोग | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 28 | रेवती | शुभ | अमृत सिद्धि/सर्वार्थ सिद्धि | |

ध्वांक्ष, वज्र और मुद्गर योगों की आरंभिक 5 घटी, पद्म और लुम्ब योगों की आरंभिक 4 घटी, गदयोग की आरंभिक 7 घटी, धूम्रयोग की आरंभिक 1 घटी, काणयोग की आरंभिक 2 घटी और मुसलयोग की आरंभिक 2 घटी को छोड़कर उनकी शेष घटियों में शुभ कार्य किया जा सकता है, जबकि राक्षस, मृत्यु, उत्पात और काल योगों की पूर्ण घटियां शुभ कार्यों के लिए त्याज्य हैं। (1 घटी = 24 मिनट

**शनिवार** के दिन एक विशेष **नक्षत्र** के सहयोग से बनने वाले तात्कालिक शुभ और अशुभ योग निम्न प्रकार से हैं। यदि संभव हो तो अशुभ योगों और निषेध कार्य को प्रयोग में न लाएं, और यदि आपातकालीन कार्य है तो परिहारों के साथ करें, तो कार्य निर्विघ्न, शुभ और मंगलमय होगा।

| क्रम संख्या | नक्षत्रों के नाम | शुभ/अशुभ योग | शुभ/अशुभ योगों के नाम | निषेध कार्य तथा अशुभ योगों की त्याज्य आरंभिक घटी (मिनट) |
|---|---|---|---|---|
| 1 | अश्विनी | | | |
| 2 | भरणी | | | |
| 3 | कृत्तिका | | | |
| 4 | रोहिणी | शुभ | अमृत सिद्धि/ अमृत/ सर्वार्थ सिद्धि | यात्रा त्याज्य |
| 5 | मृगशिरा | | | |
| 6 | आर्द्रा | | | |
| 7 | पुनर्वसु | | | |
| 8 | पुष्य | | | |
| 9 | अश्लेषा | | | |
| 10 | मघा | अशुभ | कुयोग | |
| 11 | पूर्वाफाल्गुनी | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | उत्तराफाल्गुनी | अशुभ | | उत्पात | | |
| 13 | हस्त | अशुभ | | मृत्यु/यम घण्ट | | यात्रा/शुभ कार्य |
| 14 | चित्रा | अशुभ | | काण | | |
| 15 | स्वाती | शुभ | | सिद्ध/अमृत/सर्वार्थ सिद्धि | | |
| 16 | विशाखा | | | | | |
| 17 | अनुराधा | | | | | |
| 18 | ज्येष्ठा | | | | | |
| 19 | मूला | शुभ | अशुभ | प्रशस्त | कुयोग | |
| 20 | पूर्वाषाढ़ा | अशुभ | | कुयोग | | |
| 21 | उत्तराषाढ़ा | अशुभ | | कुयोग | | |
| 22 | अभिजित | | | | | |
| 23 | श्रवण | शुभ | अशुभ | सर्वार्थ सिद्धि | कुयोग | |
| 24 | धनिष्ठा | | | | | |
| 25 | शतभिषा | अशुभ | | कुयोग | | |
| 26 | पूर्वा भाद्रपद | | | | | |
| 27 | उत्तरा भाद्रपद | | | | | |
| 28 | रेवती | अशुभ | | दग्ध (अधम) | | |

ध्वांक्ष, वज्र और मुद्गर योगों की आरंभिक 5 घटी, पद्म और लुम्ब योगों की आरंभिक 4 घटी, गदयोग की आरंभिक 7 घटी, धूम्रयोग की आरंभिक 1 घटी, काणयोग की आरंभिक 2 घटी और मुसलयोग की आरंभिक 2 घटी को छोड़कर उनकी शेष घटियों में शुभ कार्य किया जा सकता है, जबकि राक्षस, मृत्यु, उत्पात और काल योगों की पूर्ण घटियां शुभ कार्यों के लिए त्याज्य हैं। (1 घटी = 24 मिनट)